तेरी बच्ची ने मेरा बस्ता फेंक दिया
तो मैं क्या करूं
नीलोफर का घर
अपनी बच्ची को समझा ले

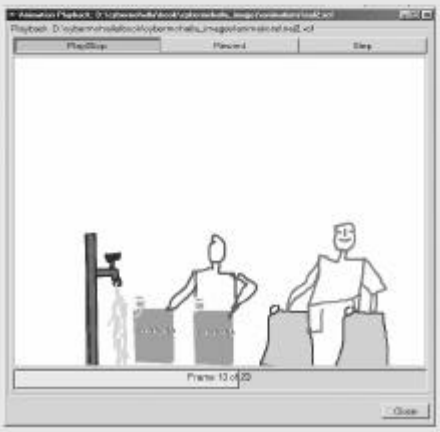

## समय >> 18.05.2001

समय रुक जाता है जब नल चला जाता है। जब बिजली चली जाती है तो समय रुक जाता है। जब दोपहर को हम सो जाते हैं तो समय रुक जाता है। समय रुक जाता है जब हम स्कूल की क्लास में बैठे होते हैं। समय तब भी रुक जाता है जब हम कहीं बाहर घूमने नहीं जाते और घर में ही रह जाते हैं।

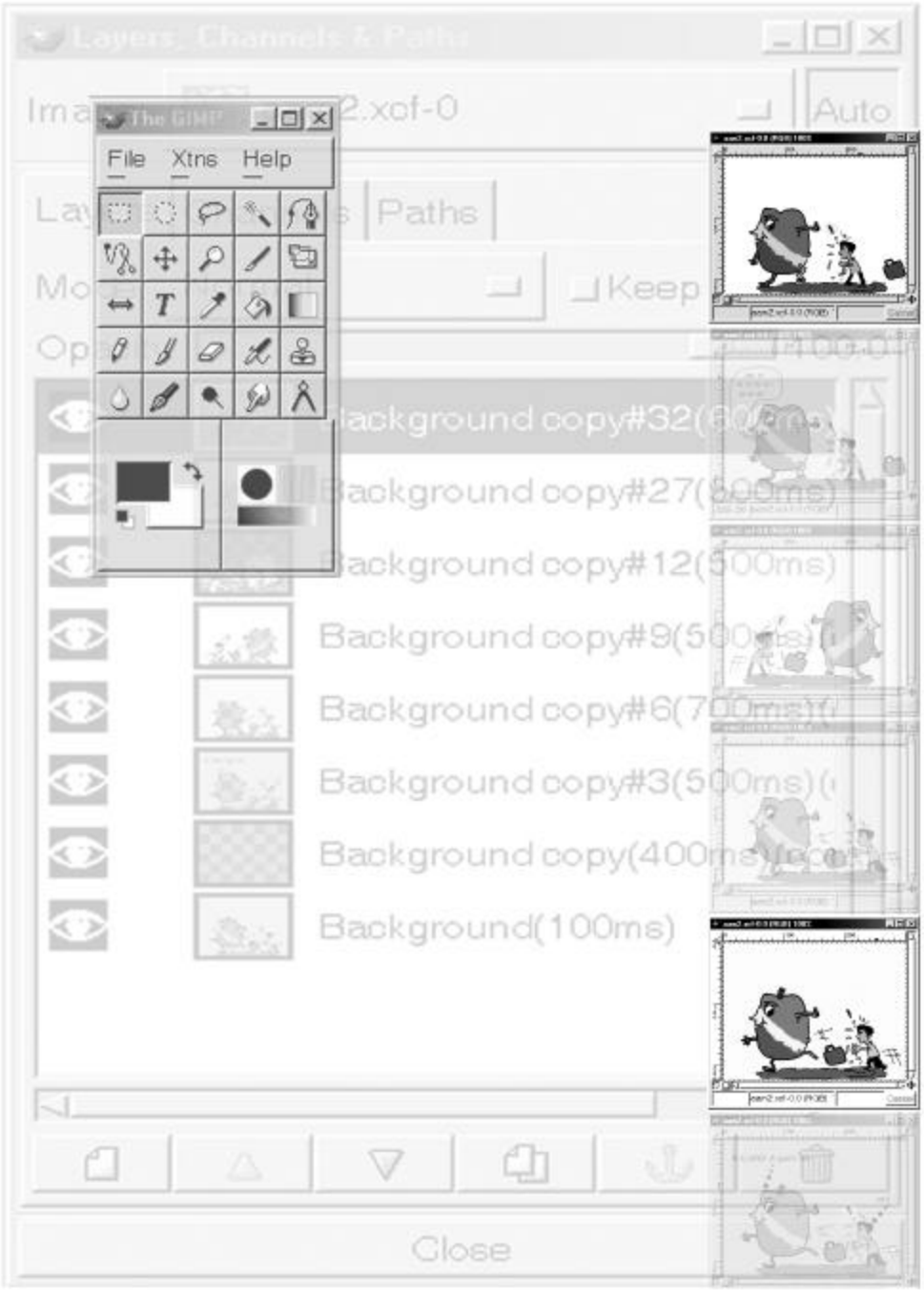
Layers, Channels & Paths
Auto
The GIMP
File
Xtns
Help
Paths
Keep
Background copy#27(800ms)
Background copy#12(500ms)
Background copy#9(500ms)
Background copy#6(700ms)
Background copy#3(500ms)
Background copy(400ms)
Background(100ms)
Close

# कहानी नाटक >> 02.08.2001

पैर क़ब्र में लटके।
दिल जवान।
आँखें चार।
यानि, बूढ़े ने बूढ़ी को देखा।
दिल धड़का।
गानाः तुम्हें देखा तो ये जाना।
देखा है पहली बार।
बूढ़े ने आँख मारी, गानाः आँख मारे।
उसको लेटर लिखी। पढ़ना नहीं आता! सहेली के पास गई पढ़ाने।
सहेली को भी ज़िंदगी का नया रास्ता दिखाया।
सहेली भी शुरू हो गई।
बूढ़े के घर में ख़र्चा बंद।
बूढ़ी की ख़्वाहिशें पूरी करने लगा।
बूढ़ी दीवानी हो गई।
बुढ़िया ने बाल काले किए। जवान हो गई।
बत्तीसी निकाल के दोनों घूमने गए।
बूढ़ी को सहेली मिली।
चश्मा टूटा था, बूढ़े को देखा।
बूढ़ी को कम दिखाई देता था।
दूसरी बुढ़िया जीजा समझ कर बोली, बात की।
बूढ़े ने चश्मा दिलाया।
चश्मा पहनते ही धक्का लगा।
अरे ये तो मेरा है!।
दूसरी बूढ़ी बेहोश, पहली परेशान।
बूढ़े ने दूसरी को गोद में उठाया, पहली जली।
मन में बोलीः बूढ़े! जवान सामने, बूढ़ी गोद में।
अच्छा अच्छा, साली है।

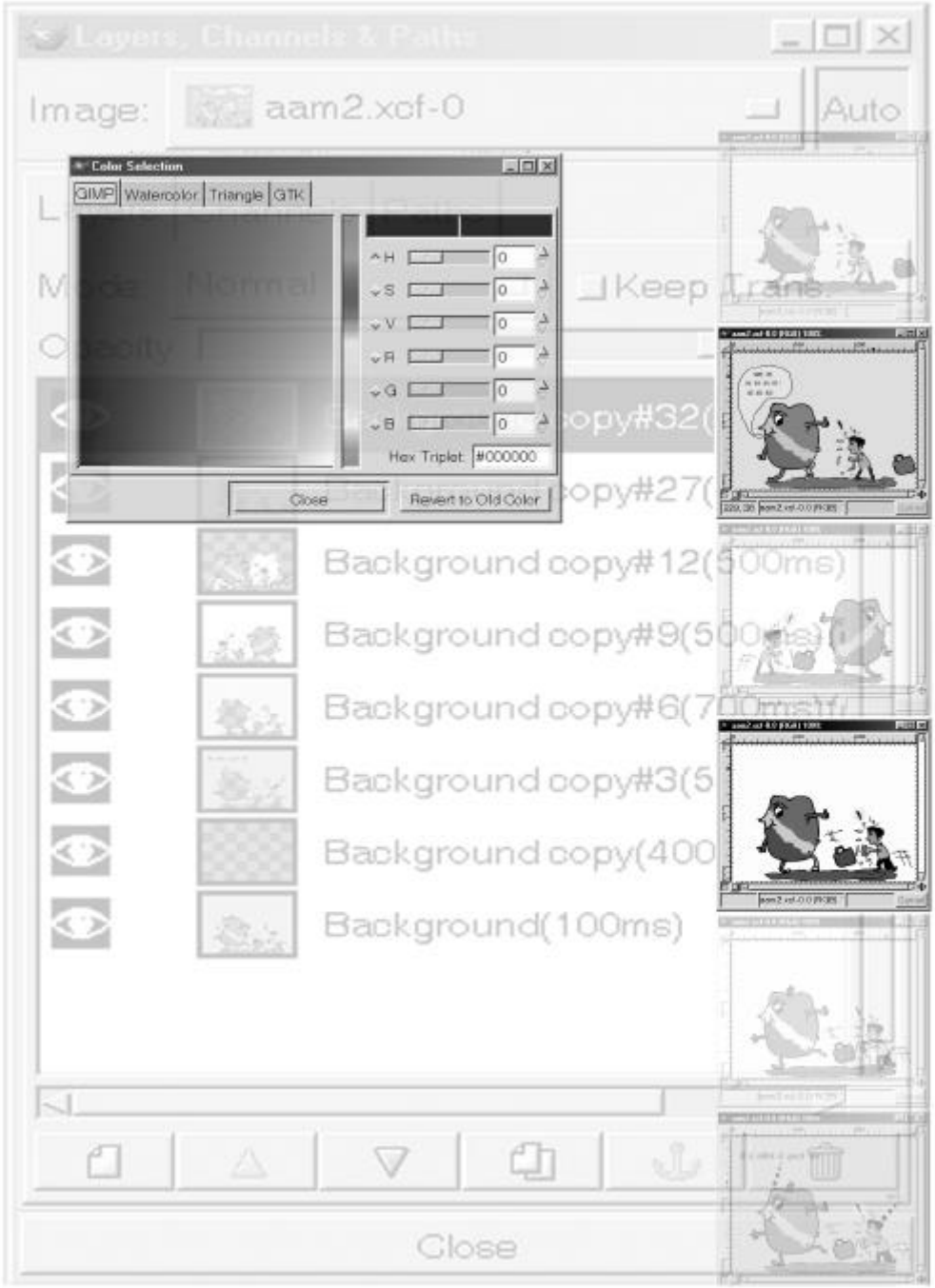
Layers, Channels & Paths
Image:
aam2.xcf-0
Auto
Color Selection
GIMP
Watercolor
Triangle
GTK
H
S
V
R
G
B
Hex Triplet:
#000000
Close
Revert to Old Color
Keep Trans.
Normal
Background copy#12(500ms)
Background copy#9(500ms)
Background copy#6(700ms)
Background copy#3(5
Background copy(400
Background(100ms)
Close

नहीं! साली आधी घरवाली होती है!
बूढ़े ने दूसरी बूढ़ी पर पानी डाला।
बूढ़ी ने भरे हुए दिल से कहा, जीजा जी।
पहली बूढ़ी ख़ुश।
दूसरी का दिल टूटा, गाना गायाः
इस दिल के टुकड़े हज़ार हुए।
दोस्त दोस्त न रहा।
ग़म में मायूस हो गई।
खाने-पीने की ख़बर नहीं।
ग़म में मर गई।
पहली वाली बूढ़ी दूसरी के रूम में।
उसे अपने बूढ़े के फ़ोटो मिले।
उसे दुःख हुआ।
काश पहले मालूम होता...
तो मैं अपना बूढ़ा इसे दे देती।
पर अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत!

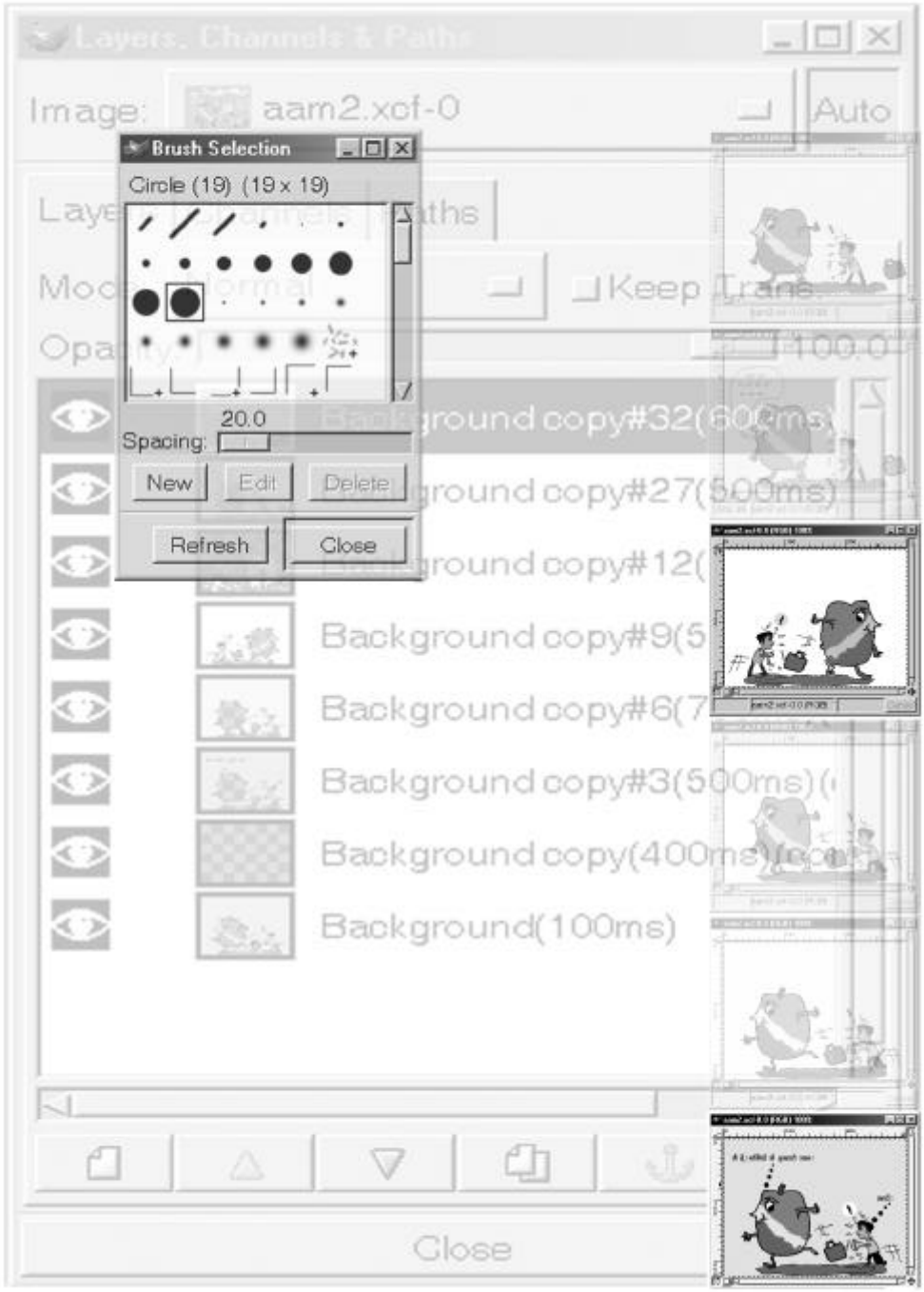
Layers, Channels & Paths
Image:
aam2.xcf-0
Auto
Brush Selection
Circle (19) (19 x 19)
20.0
Spacing:
New
Edit
Delete
Refresh
Close
Keep Trans
100.0
Background copy#32(600ms)
Background copy#27(500ms)
Background copy#12(
Background copy#9(5
Background copy#6(7
Background copy#3(500ms)
Background copy(400ms)
Background(100ms)
Close

# एक फ़ोटो की रीडिंग >> 05.03.2002

इस फ़ोटो में मुझे एक बच्चा, किसी की दाहिनी टाँग, ट्रक का पहिया और परछाइयाँ दिख रहीं हैं। इसमें लाइट हमारे थोड़े ऊपर, चेहरे की तरफ़ से आ रही है। इसमें लाइट का बहुत अच्छा प्रदर्शन है। जहाँ-जहाँ सामान है वहाँ रोशनी पड़ रही है। पर मैं इतने यक़ीन से नहीं कह सकता क्योंकि इन काली परछाइयों में क्या है, वह हमें नहीं मालूम। क्या हो सकता है इस परछाई में? इस बच्चे के माँ-बाप, घर, ट्रक जैसा एक ट्रक कोई, और बच्चा। या फिर जैसी यह तस्वीर जो रोशनी में है, वैसी ही एक तस्वीर। क्या हो सकता है इस अंधेरे में?

इसमें तो शायद बहुत कुछ हो। या कुछ भी न हो। पर हमें ये नहीं सोचना। अगर हम सोचें तो ये, कि इसमें क्या हो सकता है। मैं तो कहता हूँ जो हम चाहें, वही। अभी तो ये हमारे पास है। हम हैं इसके मालिक। हम इसके साथ कुछ भी कर सकते हैं। हम चाहें तो इसे अंधेरी दुनिया बना दें। हम चाहें तो इसमें कलर टी.वी., वॉशिंग मशीन, बिल्डिंग, इंडिया गेट, या गटर, नाला, पानी से भरा गड्ढा भी बना सकते हैं।

मगर मुझे इन सब पर लिखना नहीं है। मुझे इस फ़ोटो में क्या दिख रहा है, वो लिखना नहीं है।

मेरी अपनी सोच से बच्चे को देखकर, एक टाँग देखकर जो अनुमान लगाया है, वो लिख रहा हूँ। मगर हम बच्चे को क्या रूप दे सकते हैं? लावारिस। मैं इस बच्चे को लावारिस नहीं बनाऊँगा। आप सब समझते होंगे कि एक टाँग को देखकर मैंने बच्चे को लावारिस नहीं बनाया। यह टाँग किसी की भी हो सकती है।

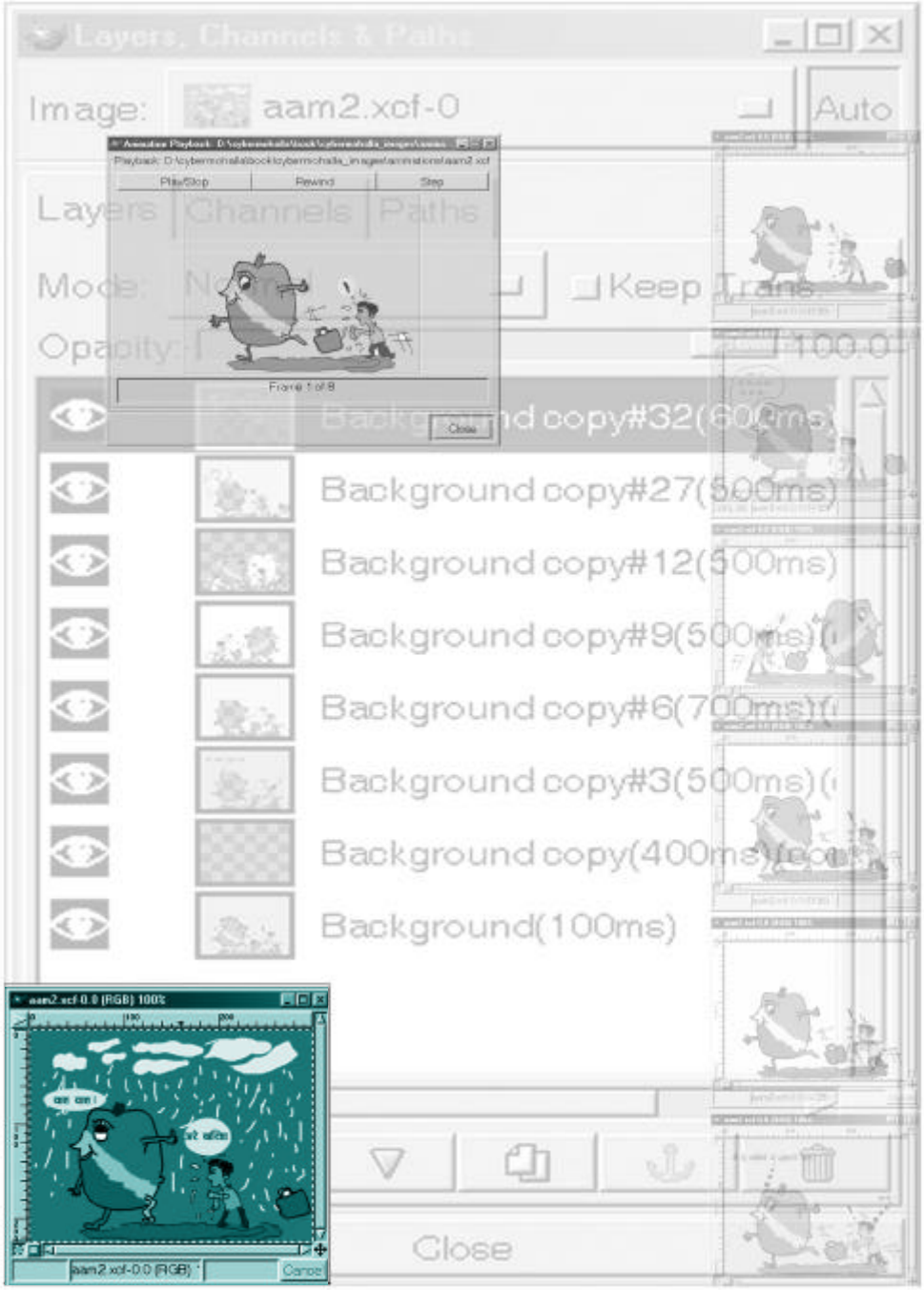
Layers, Channels & Paths
Image:
aam2.xcf-0
Auto
Play/Stop
Rewind
Step
Layers
Channels
Paths
Mode:
Keep Trans.
Opacity:
100.0
Frame 1 of 8
Close
Background copy#32(600ms)
Background copy#27(500ms)
Background copy#12(500ms)
Background copy#9(500ms)
Background copy#6(700ms)
Background copy#3(500ms)
Background copy(400ms)
Background(100ms)
aam2.xcf-0.0 (RGB) 100%
aam2.xcf-0.0 (RGB)
Close

आदमी की, या औरत की। मगर यह टाँग उसकी होगी जिसकी हम चाहें। हम ही इसका निर्माण करेंगे। हम ही बनायेंगे कि यह टाँग किसकी है। मगर बात यह है कि मैंने इस बच्चे को लावारिस बनाना ठीक नहीं समझा। नहीं तो टाँग तो क्या, पूरी भीड़ में भी मैं इसे लावारिस बना सकता था। वो कैसे? यह सब आप ही जानिए।

तो आइए देखिए, मैंने क्या सोचा है। इस फ़ोटो को देखकर क्या लगा है? इस फ़ोटो को देखकर अगर मुझे पता चल जाए कि यह फ़ोटो किसने ख़ींची है, तो मैं उन्हें फ़ोटोग्राफ़ी में कोई ख़िताब दे दूँ।

एक बच्चा है, वह रो रहा है। ऐसा मुझे इसलिए लगा कि वह घुटने पर चल रहा है। और उस टाँग की तरफ़ बढ़ रहा है। वह बच्चा उस टाँग की तरफ़ देख कर आगे बढ़ रहा है। वह टाँग उसकी माँ की है। उसकी माँ कुछ पकाने जा रही है। शायद उसके बेटे को भूख लगी है, इसलिए वो पकाने गई है।

यह गाड़ी जो खड़ी है, वो ही इसका घर है। वे इसमें रहते हैं। औरत का पति खाने की चीज़ लेने गया है। इसका पति गाड़ी चलाता है। और पत्नी और बच्चा भी गाड़ी में रहते हैं। साथ-साथ जाते हैं। इनका कोई घर नहीं है। यह गाड़ी ही इनका घर है। मैं इस गाड़ी को ख़राब भी बना सकता था। मगर नहीं। क्योंकि मैंने इसके टायर को देखा। वह बिलकुल सही था। वह सही हैः उसमें पूरी हवा भरी हुई है। वह बिलकुल ख़राब नहीं है।

मैं इस कहानी को एक और मोड़ दे सकता हूँ। वह क्या है? ये आप सोचिए।

धन्यवाद।